आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 3/सितंबर 2022
Received: 28/08/2022; Accepted: 12/09/2022; Published: 24/09/2022

नागार्जुन की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना की गूँज

- डॉ.शकुंतला पाटील
बीजापुर
ई-मेल: shakuntalagouda7@gmail.com

डॉ.शकुंतला पाटील, नागार्जुन की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना की गूँज, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक 3 / सितंबर 2022,(198-201)

साहित्य के प्रगतिवादी धारा में आनेवाले कविवर नागार्जुन अपनी बेबाकीपन के लिए मशहूर है। साहित्य के क्षेत्र में उन्होंने अपने लेखन कार्य के माध्यम से समाज के खोखलेपन को सच्चा आईना दिखाने का कार्य किया है। दरभंगा जिले में जन्मे नागार्जुन का वास्तविक नाम 'वैद्यनाथ मिश्र' था। विवाह के एक साल बाद ही वे अपनी पत्नी अपराजिता देवी को घर पर छोड़ देश-विदेश घूमने निकल पड़े। सन् 1936 में लंका में बौद्धधर्म की दीक्षा लेने के पश्चात् वापस लौटकर जनांदोलन का नेतृत्व करने का कार्य किया। लंका में व्यतीत समय को उन्होंने अंग्रेजी साहित्य के अध्ययन करने हेतु उपयुक्त बनाया जिसके कारण उन्हें भारत में फैली सारी विसंगतियों को जानने-समझने का अवसर प्राप्त हुआ। घुमक्कड़ प्रवृत्ति के कारण उन्होंने हिमालय, तिब्बत आदि क्षेत्रों की यात्राएँ की। इसकी झलक उनकी रचनाओं में पायी जाती है।

नागार्जुन जनहित के लिए आवाज़ उठाने वाले कवि कहे जाते है। इसी कारण उन्हें 'जनकवि' कहा जाता है। इन्होंने हिन्दी में 'नागार्जुन' नाम से कलम चलायी है। इतनी ही नहीं 'यात्री' नाम से वे मैथिली भाषा में भी लेखनकार्य के लिए प्रसिद्ध है। साहित्य में प्रत्येक रचनाकार किसी विशिष्ट दृष्टिकोण के लिए जाना जाता है। उन लेखकों में नागार्जुन समाज व देश के प्रति अपने विचारों को व्यक्त करते नजर आते है। वे समाज में फैली कुरीतियों, अंधविश्वास, भ्रष्टाचार जैसे कुरीतियों पर सीधा प्रहार करते हैं। इतना ही अपने देश के लिए भी वे अपने प्रेम व गौरव को व्यक्त करने में कभी पीछे नहीं रहते। यहाँ नागार्जुन की कुछ कविताओं पर विश्लेषण देने का प्रयास हुआ है, जिनमें उनकी राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि को देखा जा सकता है।

कवि नागार्जुन का काव्य जितना मध्यवर्गीय समाज से जुड़ा है उतना ही राष्ट्रीयता से सराबोर है। वे जनमंगल के तथा जागरण के प्रतीक दिखायी देते हैं, अतः उनकी कविताओं में राष्ट्रीयता को बिंबित पंक्तियाँ

सशक्त भावों से प्रस्तुत होती है। आज़ादी के लिए अपने जीवन को न्योछावर करनेवाले महात्मा गांधीजी के प्रति उन्होंने श्रद्धा व्यक्त की है। गाँधीजी की मृत्यु पर विषाद व्यक्त करते हुए अपनी 'तर्पण' कविता में उसकी अभिव्यक्ति इस प्रकार करते हैं-

"बापू मरे!

अनाथ हो गयी भारत माता

अब क्या होगा-

अंधकार ही अंधकार है।"[i]

नागार्जुन की कविता उस तीन-चौथाई हिन्दुस्तान से संबंधित है जो राष्ट्रीय उत्पादन और विकास की रीढ़ कहा जाता है। पर इस देश में कुछ लोग ऐसे हैं जो पूँजी के बल पर सारे राष्ट्र के भविष्य और वर्तमान पर कुण्डली मारकर बैठ गए हैं। 'धन कुबेरों' की यह जमात भी उनकी की कविताओं में अक्सर दिखाई दे जाती है। इन्हीं की बदौलत समाज में तिकडम, शोषण, भ्रष्टाचार और प्रदर्शन का नंगा नाच होता है। उनकी कविता 'शासन की बंदूक' में इसकी अभिव्यक्ति हुई है-

"सत्य स्वयं घायल हुआ, गई अहिंसा चूक

जहाँ-तहाँ दगने लगी शासन की बंदूक।।"[ii]

देश-विदेश में भ्रमण के कारण वे अपने पराधीन देश की स्थिति को अच्छी तरह से समझते थे। वह अपनी मातृभूमि के अनन्य भक्त रहे है। उनका मन देश के प्रति यह पुकारता है-

"खेत हमारे भूमि हमारी, सारा देश हमारा है,

इसीलिए तो हमको इसका चप्पा-चप्पा प्यारा है।"[iii]

अपने देश के प्रति जहाँ कवि असीम प्रेम व भक्ति दिखाते नजर आते है तो वही जब अन्य देश भारतमाता पर आक्रमण करते हैं तो वे रोश से भर उठते हैं। इसकी अभिव्यक्ति उनकी कई कविताओं में पायी जाती है। जब सन् 1962 में भारत पर चीनियों ने आक्रमण किया व भारत पर अपना अधिपत्य स्थापित करने का प्रयास किया तो प्रत्येक भारतीय के मन को झकझोरता था। इस स्थिति में कवि कहते हैं-

"आज तो मैं दुश्मन हूँ तुम्हारा

पुत्र हूँ भारतमाता का

और कुछ नहीं हिन्दुस्तानी हूँ महज

प्राणों से भी प्यारे हैं मुझे अपने लोग

प्राणों से भी प्यारी है मुझे अपनी भूमि।"[iv]

ऐसा ही एक अन्य संदर्भ देखने को मिलता है, जब पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया तब भी कविमन अपनी मातृभूमि के लिए द्रवित हो उठता है। उनकी रचनाओं में विद्रोही रूप देखते है। वे तानाशाह अयूब खाँ को फटकारता हुए बोलते हैं-

"इकतरफा शांति का हो चुका अवसान

आज नहीं वही है जो कल का हिन्दुस्तान

करेगा बर्दाश्त कौन अब ये अपमान

झाड़ देंगे अय्यूब का हिटलरी गुमान

खबरदार दुश्मन, दुश्मन सावधान!"[v]

राष्ट्रप्रेम की अभिव्यक्ति उसके सेनानियों के लहू के कण-कण में समाई रहती है। वे अपने देश के लिए अपने जीवन को ही न्योछावर कर देते हैं। ऐसे वीर सेनानियों के राष्ट्रप्रेम को कवि ने अपनी कविता 'भोजपुर' में की है।

"एक-एक सिर सूँघ चुका हूँ

एक-एक दिल छूकर देखा

इन सबमें वहीं आग है, ऊर्जा वो ही...

चमत्कार है इस माटी में

इस माटी का तिलक लगाओ

बुद्धु इसकी करो वंदना

यही अमृत है, यही चंदना

बुद्धु इसकी करो वंदना।"[vi]

नागार्जुन प्रगतिवाद के प्रवर्तक के रूप में जाने जाते है। इस कारण देश में फैली बेकारी से, भ्रष्टाचार के कारण पीछड़ी देश की गति को देखकर रोश में वे लिखते हैं

"देश हमारा भूखा नंगा घायल है बेकारी से

मिने न रोटी-रोजी भर के दरदर बने भिखारी से

स्वाभिमान सम्मान कहाँ है, होली है इंसान की

बदला सत्य, अहिंसा बदली, लाठी गोली डण्डे हैं।"[vii]

देश की इस स्थिति को देखकर वे राष्ट्र की प्रगति के लिए भारत की एकता को बनाए रखने की आस को व्यक्त करते हैं। इतना ही नहीं जातिय एकता की ओर संकेत करते हुए स्वदेश प्रेम को बनाए रख राष्ट्र की उन्नति की कामना भी करते हैं।

"फ्रन्ट पर सौ जातियाँ बिलकुल डटी हैं

राष्ट्र के अपमान हमने धो दिये हैं

चन्द्रभागा, व्यास, सतलज के तटों पर

एकता के बीज हमने बो दिये हैं।"[viii]

निष्कर्षतः हम यह पाते है कि नागार्जुन की कविताओं में राष्ट्र के प्रति प्रेम, श्रद्धा, गौरव असीम रूप में भरा हुआ है। उनकी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना के विभिन्न पहलुओं की अभिव्यक्ति हुई है। जहाँ कवि देशप्रेम की रचनाएँ लिखते हैं, तो वही अपने देश के सैनिकों के, वीरनायकों के बलिदान को स्मरण करते हुए उनका गुणगान भी करते है। इतना ही नहीं अपने देश पर आक्रमण करनेवाले अन्य देशों के प्रति विद्रोह भी करते है और देश की प्रगति में बाधक भ्रष्टाचार, सत्ता की स्वार्थलिप्सा का विरोध करते भी दिखाई देते हैं। अतः इनकी रयनाओं में राष्ट्रीय चेतना की गूँज सर्वत्र फैली हुई है।

संदर्भ सूची

[i] . हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि- प्रा.राठोड़ बाळु, पृ.सं. 124

[ii] . कविता कोश- मोबाइल, एप्प

[iii]. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि- डा.द्वारिका प्रसाद सक्सेना, पृ.सं.458

[iv] . हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि- डा.द्वारिका प्रसाद सक्सेना, पृ.सं.458

[v] . हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि- डा.द्वारिका प्रसाद सक्सेना, पृ.सं.458

[vi] . https://www.hindi-kavita.com

[vii] . हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि- प्रा.राठोड़ बाळु, पृ.सं.125

[viii] . हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि- डा.द्वारिका प्रसाद सक्सेना, पृ.सं.459

****